

---

# Shri Pashupatiyashtakam

श्रीपशुपत्यष्टकम्

## Document Information

---

Text title : pashupatiyaShTakaM

File name : pashu8.itx

Category : aShTaka, shiva

Location : doc\_shiva

Proofread by : NA

Latest update : August 23, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

# Shri Pashupatyashtakam

## श्रीपशुपत्यष्टकम्



ध्यानम् ।

ध्यायेन्नित्यं मडेशं रजतगिरिनिभं यारुच्यन्द्रावतंसं

रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिडस्तं प्रसन्नम् ।

पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगाणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं

विश्वाद्यं विश्वबीजं निम्बिलभयडरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

अथ स्तोत्रम् ।

पशुपतिं ध्रुपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सतीपतिम् ।

प्रज्ञातभक्तजनार्तिडरं परं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ १ ॥

न जनको जननी न य सोदरो न तनयो न य भूरिभलं कुलम् ।

अवति कोऽपि न कालवशं गतं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ २ ॥

मुरजडिडिडिमवाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनादविशारदम् ।

प्रमथभूतगाणैरपि सेवितं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ ३ ॥

शरणाद्यं सुभदं शरणाङ्घ्रितं शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम् ।

अभयदं करुणावरुणालयं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ ४ ॥

नरशिरोरचितं मण्डिडुडुडलं भुजगडारमुदं वृषभध्वजम् ।

शितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ ५ ॥

मभविनाशकरं शशिशेभरं सततमध्वरभाजिङ्गलप्रदम् ।

प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ ६ ॥

मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरणाजन्मजराभयपीडितम् ।


जगद्गृहीक्ष्य समीपभयाकुलं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ ७ ॥

डरिविरञ्चिसुराधिपपूजितं यमजनेशधनेशनमस्कृतम् ।


त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ ८ ॥

पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथिवीपतिसूरिणा ।  
पठति संशृणुते मनुजः सदा शिवपुरीं वसते लभते मुदम् ॥ ८ ॥  
इति श्रीपशुपत्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

——  
*Shri Pashupatiyashtakam*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

